अध्याय पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 संक्षेपिका

5.2 निष्कर्ष

5.3 सुझाव

5.4 भावी शोध हेतु समस्याएँ

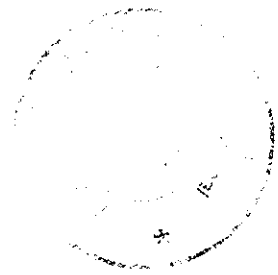

अध्याय–पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तावना

विद्यार्थी शिक्षण प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण घटक है। आज की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी केन्द्रित होकर कई आयामों का अध्ययन, विश्लेषण तथा संश्लेषण कर तथा आधुनिक वैज्ञानिक अथवा मनोवैज्ञानिक सिद्वांतों का अनुप्रयोग कर अधिकतर बालकों का विकास करने में जुट रही है। बालकों का विकास शिक्षा के माध्यम से सफलता पूर्वक हो रहा है। किशोरावस्था का अध्ययन आज भी समाजशास्त्र में, शिक्षा शास्त्र में मनोविज्ञान में हो रहा है तथा यह पाया गया है कि किशोरवयीन बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का असर उनके व्यक्तिगत जीवन पर ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज पर ही मानो हो रहा है, साथ ही उनके समायोजन का भी प्रभाव समाज से अछूता नही है इसलिये अध्ययनकर्ता के मन मे यह प्रश्न निर्माण हुए कि किशोरवयीन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य, एवं समायोजन कैसा है? और क्या सही मायने में यह एक दूसरे पर असरकारक अवधारणाएँ है? क्या किशोरवयीन बालक और बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन में कोई निश्चित अन्तर है? क्या शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियोंके मानसिक स्वास्थ, समायोजन में कोई संबध है? इन्हीं सब प्रश्नों के समाधान हेतु प्रस्तुत अध्ययन करने की कोशिश की गयी है।

5.1 संक्षेपिका

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध सम्बन्धित अध्ययन, तृतीय अध्याय में शोध समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा

पंचम अध्याय में शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में सदर्भग्रंथ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरणों को लिया गया है।

- **शोध का शीर्षक**

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
- शासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा संमायोजन की तुलना का अनुमापन करना।
- अशासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियोंके मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन की तुलना का अनुमापन करना।
- किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
- किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का लिंगगत अध्ययन करना।
- किशोरवयीन विद्यार्थियों के समायोजन का लिंगगत अध्ययन करना।

- **परिकल्पनाएँ**

प्रस्तुत शोध के निम्न परिकल्पनाएँ रखी गई हैं:–

1. शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा उनके समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।
4. अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा उनके समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।
5. किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा उनके समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं हैं।
6. किशारेवयीन छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
7. किशोरवयीन छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

- **शोध का परिसीमन**

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने कुछ सीमाओं का निर्धारण किया है जो निम्नलिखित है:–

- प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के शासकीय तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत शोध केवल 15 से 17 आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर किया गया है।

- **चर**

  शोध में स्वतंत्र एवं आश्रित चर इस प्रकार रखे गए हैं

- **स्वतंत्र चर**

  विद्यालयों के प्रकार (शासकीय, अशासकीय)

  लिंग (बालक, बालिका)

- **परतंत्र चर**

  मानसिक स्वास्थ्य

  समायोजन

- **न्यादर्श चयन की प्रक्रिया**

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु भोपाल शहर के दो शासकीय तथा दो अशासकीय विद्यालयों का कुल 80 प्रदत्तों का चयन यादृच्छिक पद्वति से किया गया है जिसमें 35 किशोरवयीन छात्र एवं 45 किशोरवयीन छात्राएं थी।

प्रयुक्त उपकरण

किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का मापन करने के लिए अरूण कुमार सिंग एवं अल्पना सेन गुप्ता (1983) द्वारा निर्मित मेन्टल हेल्थ बॅटरी का उपयोग किया गया है। तथा किशोरवयीन विद्यार्थियों के समायोजन का मापन करने के लिए श्रीमती, आर.दुबे द्वारा निर्मित ॲडोलेसन्ट गर्ल्स एडजस्टमेन्ट स्केल एवं ॲडोलेसन्ट बॉईज एडजस्टमेन्ट स्केल का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिये मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी टेस्ट, एवं सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी है। तथा शोध उद्देश्य के आधार पर परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है।

5.2 निष्कर्ष

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य मे अंतर नही है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के समायोजन मे अंतर नही है।
3. शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य कोई सहसंबध नही है।
4. अशासकीय विद्यालयों मे अध्ययनरत किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन के मध्य सहसंबध है।
5. किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसंबध है।
6. किशोरवयीन छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई अंतर नही है।
7. किशोरवयीन छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्य कोई अंतर नही है।

5.3 सुझाव

आज के किशोरवयीन बालक कल के देश के भावी नागरिक बनने वाले है जब तक किशोरवयीन विद्यार्थियों का शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, भावनिक तथा सांवेगिक विकास नहीं होता है तब तक भविष्य में देश की बागडौर चलाने वाले युवा देश को सही दिशा में विकास की ओर नहीं ले जा सकते है इसलिए वर्तमान समय में ही समय न गवाते हुये किशोरवयीन बालको का विकास एवं पुर्नस्थापना करने हेतु उनके समस्याओं को सर्वांगिन दृष्टिपात करके एवं गहन अध्ययन करके किशोरों को

राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना अधिक आवश्यक है इसलिये इन बातों को बढ़ावा देने के लिये निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

- शिक्षकों को किशोरवयीन विद्यार्थियों के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति रखनी चाहिये।
- किशोर एवं किशोरियों के बढ़ते अपराधों को रोकने कि कोशिश स्कूल, कॉलेजों, परिवार, राज्यशासन एवं केन्द्रशासन को करना चाहिये।
- मानव संसाधन विकास के तहत शिक्षा नीति में किशोरवयीन विद्यार्थियों के यौन सम्बन्धी दुश्चिंता को कम करने के लिये यौन सम्बन्धी शिक्षण को अनिवार्य करना चाहिये।

5.4 भावी शोध हेतु समस्याएँ

भविष्य के शोध हेतु प्रस्तावित समस्याएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन के लिये दी जा सकती है क्योंकि किशोर अपराध के लिये दी जा सकती है क्योंकि किशोर अपराध एक गंभीर समस्या धारण कर रही है, इनको नष्ट करने के लिये विद्यालय में जाने वाले अथवा नहीं जाने वाले सभी किशोरवयीन विद्यार्थियों के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पक्षों पर अधिक अध्ययन की आवश्यकता है। इस दिशा में शोधकर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु कुछ महत्वपूर्ण समस्या इस प्रकार है :–

- छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी किशोरवयीन विद्यार्थियों के धूम्रपान एवं नशा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
- किशोरवयीन विद्यार्थियों का राष्ट्रीय एकात्मता के प्रति जागरूकता पर उनके सामाजिक परिस्थिति का प्रभाव : एक अध्ययन।
- किशारवयीन बालिकाओं के समव्यस्क समायोजन पर सामाजिक आर्थिक घटकों के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

- ग्रामीण एवं शहरी किशोरवयीन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शिक्षा के अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

- ग्रामीण एवं शहरी किशोरवयीन विद्यार्थियों के समवयस्क एवं स्वः समायोजन, बुद्धिमता, सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।

- किशोरवयीन विद्यार्थियों के मूल्यों पर उनकी सामाजिक आर्थिक एवं मनावैज्ञानिक चरों के प्रभाव का अध्ययन।